पिछले एक वर्ष से मैं 'संदर्भ' की पाठक हूं। कई रोचक लेखों को पढ़ा व सराहा है। यह महसूस भी किया कि विज्ञान में मेरी रुचि बढ़ गई है। लेखों की भाषा स्पष्ट है तथा विषय को बहुत अच्छी तरह समझाया गया है।

मेरे पिताजी, जो आई. आई. टी. में प्रोफेसर हैं, उन्हें भी 'संदर्भ' में छपे विज्ञान के लेख काफी प्रभावशाली लगे।

शिक्षकों द्वारा अपने अनुभवों के बारे में बताना भी एक नया विचार लगा। इस तरह हम यह जान सकते हैं कि कक्षा में असल में क्या होता है। बच्चों की शिक्षक से क्या अपेक्षाएं हैं और वे क्या महसूस करते हैं, यह जानकारी किसी भी शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण है।

जानना चाहती हूं कि क्या 'सन्दर्भ' में 3-6 साल के बच्चों के विकास से संबंधित लेख भी छपते हैं? आज कल Early Childhood Care and Education पर काफी ज़ोर दिया जा रहा है। स्कूल में प्रवेश से पहले बच्चे को किस प्रकार के अनुभवों की आवश्यकता है और इन अनुभवों का बच्चे के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह आजकल चर्चा का विषय बन गया है। इन विषयों पर लेख सराहे जाएंगे।

आशा है कि आगे भी अनेक रोचक लेख पढ़ने को मिलेंगे।

रश्मि मल्होत्रा
आई. आई. टी. कैम्पस, नई दिल्ली

शैक्षिक संदर्भ जुलाई-अगस्त 1997 में प्रकाशित प्रोफेसर यशपाल का व्याख्यान (संपादित अंश) पढ़ने का सौभाग्य हुआ। इच्छा है कि पूरा व्याख्यान पढ़ा जाए और अधिक-से-अधिक अभिभावकों व अध्यापकों को भी इसे पढ़ने व समझने का मौका दिया जाए। आशा है आप पूरा व्याख्यान दिलवाने में हमारी मदद करेंगे। संदर्भ हमारे तीनों स्कूलों में पसंद की जा रही है।

दिनेश रस्तोगी
फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

हम आपके आभारी हैं कि हमने जो मेंढक के जीवनचक्र वाला लेख भेजा था वह आपने छाप दिया। हमें बेहद खुशी हुई और हम शीघ्र ही वृद्धि वाले अध्याय का लेख लिखकर भेज रहे हैं।

हमने यह सोचा भी नहीं था कि आप हमारा मेंढक वाला लेख छाप देंगे। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

मीनाक्षी बरड़े, नीता वानखेड़े, अमिता अखण्डे, अमिता गांवड़े व कन्या मा. शाला, भौरां की कक्षा-8 की समस्त छात्राएं।

नववष के उपहार स्वरूप 'संदर्भ' का 18वां अंक मिला, धन्यवाद। लगातार दो-तीन वर्षों से आप मुझे 'चकमक' भेज रहे हैं। पता

नहीं कौन-सा अंजाना रिश्ता हमारे-आपके बीच में जुड़ गया है, जिससे इतना प्यार व अपनापन मुझे मिल रहा है। बस आशा है कि यही प्यार बना रहे।

इसके पहले भी 'संदर्भ' के तीन-चार अंक मिल चुके हैं। चकमक जहां बच्चों का मनोरंजन कर ज्ञान बढ़ाती है वहीं संदर्भ किशोरों की पसंद होनी चाहिए क्योंकि इसमें विज्ञान संबंधी नई जानकारी देकर आप सहज ढंग से कुछ नया सीखने का उत्साह जगाते हैं।

18वें अंक में सबसे अच्छा लेख 'स्कूल के सवाल ज़िंदगी के सवालों से फर्क क्यों' लगा; प्रोफेसर यशपाल जी का ढंग मन को भाया। उनकी बातें शतप्रतिशत सच हैं। जीवन में ऐसी अनेक बातें घटती हैं, जिन्हें हम सबके सामने रखना नहीं चाहते जबकि उसमें वैज्ञानिक तत्व से खोज करने पर बहुत कुछ सीखा जा सकता है। इस तरह से खोजी प्रवृति का जन्म होता है।

'नींद, सुलझी अनसुलझी पहेली' के अंतर्गत भी रोचक जानकारी दी गई है, जिससे सहज आने वाली निद्रा देवी से अच्छा परिचय हुआ। 'आपने लिखा' कॉलम पढ़कर इसकी लोकप्रियता का एहसास होता है; साथ ही इस पर भी ध्यान गया कि उसके सभी लेखक मध्य प्रदेश के हैं। इससे सवाल उठता है कि क्या इसका प्रसार सिर्फ मध्य प्रदेश तक ही सीमित है, जबकि ऐसी पत्रिका को तो हमारे विचार से सभी हिन्दी स्कूलों में पढ़ना अनिवार्य होना चाहिए। कुछ नहीं तो विज्ञान के शिक्षकों तक तो ज़रूर पहुंचे, जिससे उन्हें हंसते-खेलते पढ़ाने का आइडिया मिले व बच्चे भी खूब अच्छी तरह से विज्ञान को समझकर इससे डरने की बजाए प्यार करने लगें। संदर्भ के प्रचार की काफी ज़रूरत है।

'कक्षा में गतिविधियां' स्तंभ के अंतर्गत मेंढक के बारे में प्रयोगात्मक विषय देकर बच्चों के लिए आपने एक नया तोहफा ही दिया है।

'फुटबॉल कार्बन' लेख ज़्यादा समझ में नहीं आया। शायद सातवीं कक्षा तक पढ़ा हूं इसलिए – वैसे वो भी रोचक जानकारी थी।

'रोशनी और मुर्गी का अंडा' भी काफी रोचक व मुर्गीपालने वालों के लिए फायदेमंद साबित होगा। ये जानकारी पढ़कर ऐसा लगा कि जिस तरह गाय भैंस दूध देती हैं, उसी तरह मुर्गी अंडा देती है, क्योंकि मुर्गी के अंडा देने में मुर्गे से मेल होने की कोई ज़रूरत नहीं होती। शायद इसी तरह अन्य पक्षी बत्तख-कबूतर आदि भी अण्डा देते हैं कि नहीं कृपया बताएं?

'रोज़गार' के तहत भी अर्थशास्त्र व समाज संबंधी एक खोजपूर्ण जानकारी आपने दी है। समाज के गरीब वर्ग के लिए जब तक संपन्न आदमी नहीं सोचेगा तब तक सरकारी

नीतियों से पूर्णतः सुधार नहीं हो सकता। गरीबों का दोहन तो समाज के संपन्न व्यक्ति ही करते हैं।

'क्यों पढ़ाते थे वैसे' भी काफी मज़ेदार लगा। वैसे तो सभी के जीवन में स्कूल में ऐसी घटना होती रहती है, परंतु लिखकर बताना व उसे पढ़ने में एक अलग मज़ा आता है; व सबको कुछ-न-कुछ सीखने को भी मिलता है।

कहानी 'चमत्कार' वाकई अच्छी लगी। अगली कड़ी पढ़ने की उत्सुकता बरकरार है। 'एकलव्य' से प्रकाशित साहित्य ज़्यादा-से-ज़्यादा स्कूली बच्चों तक पहुंचे इस ओर आप ज़्यादा प्रयास करें। हो सके तो राज्य सरकारों के शिक्षा सचिवों तक इसकी प्रति पहुंचाकर सभी संस्थानों में अनिवार्य कराएं, व किसी तरह प्रचार करके ऐसा कुछ करें कि चकमक व संदर्भ घर-घर पढ़ी जाने वाली पत्रिका बन जाएं। हमारी शुभेच्छा साथ है।

आप जैसे मित्रों के कारण ही जेल में रहते हुए भी, दस-ग्यारह आध्यात्मिक-साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं उपहार स्वरूप हर माह मिलती रहती हैं, जिससे इस दो हज़ार के गांव में सैकड़ों लोगों का मनोरंजन व ज्ञानवर्धन होता है। आप सबको हम सबकी ओर से लाख-लाख बधाई।

राजकुमार गुप्ता
सी-1906, यार्ड-4
बंदीशाला, नाशिक, महाराष्ट्र

'संदर्भ' का 18वां अंक मिला। 'नींद सुलझी, अनसुलझी पहेली' लेख बहुत ही अच्छा, रोचक और जानकारी से युक्त था। इस लेख ने मुझे बहुत कुछ जानने के लिए प्रेरित किया।

'फुटबॉल कार्बन .....' लेख रसायन प्रेमियों के लिए तो आनंददायक था ही। मुझे एक शिकायत है कि इस लेख में इसके खोज के इतिहास के बारे में ज़्यादा और C_{60} के रचना, गुण इत्यादि के बारे में जानकारी कम है। अतः इसकी जानकारी अधूरी लगी। 'वह आदमी जो चमत्कार कर सकता था' कहानी का अगला भाग पढ़ने के लिए मैं बेचैन हूं। मैं गणित का ग्यारहवीं का छात्र हूं। अतः मैं चाहता हूं कि इंजिन के ऊपर थोड़ी सामान्य जानकारी से युक्त कोई लेख प्रकाशित किया जाए जिससे इसके बारे में भी ज्ञान बढ़े। मैं एक और शिकायत कर रहा हूं कि मुझे 'सन्दर्भ' का अंक लगातार नहीं मिल रहा।

सरोज तिवारी
शहडोल, मध्य प्रदेश

मुझे संदर्भ के अंक लगातार मिल रहे हैं। पढ़ कर लगा कि यह पत्रिका वास्तव में एक सराहनीय प्रयास है। अंक-18 में नींद के बारे में पढ़ कर वास्तव में कई अनसुलझी

गुत्थियां सुलझ गईं। मुर्गी के अण्डे पर प्रकाश का प्रभाव जान कर आश्चर्य हुआ।

संदर्भ के बारे में मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूं कि संदर्भ को पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया जाए। पत्रिका में एक वैज्ञानिक वर्ग पहेली भी शुरू की जाए। मुझे विश्वास है कि पत्रिका और भी रोचक हो जाएगी।

कुलविन्दर सिंह
रानी बाज़ार, बीकानेर

'स्कूल के सवाल ज़िंदगी के सवालों से फर्क क्यों?' बकौल प्रोफेसर यशपाल सोच के सागर में डूब गया और मुंह से बेसाख्ता निकला 'वाह'।

अंडे के विषय में बहुत बातचीत होती है लेकिन इनमें तथ्यों के स्थान पर पूर्वाग्रहों की प्रधानता रहती है। इस विषय पर सर्वथा तथ्य परक जानकारी प्रदान करने के लिए स्निग्धा जी को साधुवाद।

'नींद सुलझी अनसुलझी पहेली', 'क्यों पढ़ाते थे वैसे' लेख भी अच्छे रहे।

प्रदीप पंजाबी,
व्याख्याता, डाइट, मंदसौर, मध्य प्रदेश

आपके द्वारा भेजी गई सन्दर्भ मुझे बहुत ही अच्छी लगी। अंक-18 में फुटबॉल कार्बन वाला लेख बहुत ही अच्छा था। चित्र भी सब अच्छे थे। प्रोफेसर यशपालजी ने बुनियादी समस्याओं पर जो विचार रखे वे तो बहुत ही पसंद आए। 'अंडे, टैडपोल और बना मेंढक' बहुत ही सहजता से समझाया गया है। 'क्यों पढ़ाते थे वैसे?' लेख जो माधव केलकर द्वारा लिखा गया है कुछ मेरे जीवन से मिलता जुलता है।

भावेश पटेल, कृष्णा सॉ मिल
हरदा, ज़िला होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

संदर्भ का अंक 16 व 17 पढ़ा। इसमें भरत पूरे व दीपक वर्मा द्वारा लिखित 'सांस लेने के तरीके' से मुझे काफी नई जानकारी मिली। मैं कक्षा चौथी व छठी में विज्ञान पढ़ाती हूं। बच्चों को जब इसमें दिए गए चित्रों के माध्यम से श्वसन संबंधी अध्याय पढ़ाया गया तो मुझे लगा कि बच्चे अच्छी तरह से समझ रहे हैं। लेख की सरल भाषा ने पूरा लेख पढ़ने व समझने में मदद की।

मीना कालरा, अध्यापिका
विद्या भवन माध्यमिक विद्यालय
झामरा कोटड़ा, उदयपुर

एक मित्र से 'शैक्षिक संदर्भ' का मार्च-अप्रैल-1997 का अंक भेंट स्वरूप पढ़ने को मिला। 'आपने लिखा' स्तंभ में प्रकाशित रमेश श्योरान के पत्र

द्वारा विज्ञान के लोकप्रियकरण के लिए सक्रिय 'हरियाणा विज्ञान मंच' की जानकारी मिली।

वर्तमान समय की आवश्यकता, विज्ञान को बोधगम्य बनाकर, विमुख होते जा रहे छात्रों को इस विषय की ओर आकृष्ट करने की है। निःसन्देह 'शैक्षिक संदर्भ' का विज्ञान शिक्षण को सुगम बनाने का प्रयास सराहनीय है।

इसी अंक में प्रकाशित 'आवर्त सारणी का इस्तेमाल' में प्रदर्शित आवर्त सारणी में गुणों की आवर्तता की इलेक्ट्रॉन ऋणात्मकता को दर्शाने का संशोधित रूप संलग्न है।

नवम्बर '97 माह में मार्च-अप्रैल का अंक मिला। अतः व्यवस्था इस प्रकार हो कि समय पर प्रतियां मिल पाएं।

त. चक्रवर्ती, शा. उ. मा. विद्यालय
मानपुर, इंदौर

आवर्त सारणी में गुणों की आवर्तता से संबंधित सुधार 17वें अंक के पृष्ठ 7 पर प्रकाशित।

संपादक

'आपने लिखा' स्तंभ के अंतर्गत आने वाले खतों को लगभग उसी रूप में पेश किया जाता है जिस रूप में उन्हें लिखा गया होता है। एकाध जगह अर्थ स्पष्ट करने के लिए या फिर जगह की दृष्टि से उन्हें हल्का-सा संपादित करना पड़ता है।

संदर्भ – देरी से क्यों?

पाठकों की चिट्ठियां लगातार मिलती हैं कि संदर्भ उन्हें देरी से मिल रही है। हमने इस बारे में हाल ही में एक खत सभी को भेजा था। आपको मिला होगा।

पिछले कुछेक अंकों से संदर्भ अपने निर्धारित समय की बजाए दो से तीन महीने देरी से प्रकाशित हो रही है– जैसे कि जिस तरह की सामग्री हम प्रकाशित करना चाह रहे हैं उसको तैयार करने में अनुमान से अधिक समय लग जाता है। शुरुआत में हमने सोचा था कि एक समय बाद हम ऐसे नए लेखक ढूंढ पाएंगे, तैयार कर पाएंगे जो नई सामग्री तैयार करने में हमारी मदद कर पाएं। लेकिन अभी तक पुराने लेखकों की टीम में ऐसे बहुत से नए लोग जोड़ने में हम कामयाब नहीं हो पाए हैं।

फिर भी हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि इस दिक्कत से जल्दी उबर पाएं। तब तक हमारा साथ दीजिए।

संदर्भ समूह